1,85,423
बच्चे हर साल वायु प्रदूषण से होने वाले निचले फेफड़ों के संक्रमण के चलते असमय मौत के मुंह में जा रहे हैं
बाकी इसके नीति निर्यंत्र व सरकार इन मौतों पर है खामोश।
अनिल अश्विनी शर्मा ओर विवेक मिश्रा की गहरी पड़ताल
आवरण कथा

राजस्थान की राजधानी जयपुर स्थित बच्चों के सारखारी जेके लोन अस्पताल में निकले फेफड़ों के संक्रमण से पीड़ित तीन वर्षीय मोहम्मद अनस। मोहम्मद अनस का एकसरे, नजसमें फेफड़े का संक्रमण साफ-साफ दिख रहा है (नीचे)

जेके लोन के चिकित्सक अनस का एकसरे दिखाते हैं। इसमें मानवीय आवाज़ उन्हें अनस का साफ सुनाते हैं। (नीचे)

राजस्थान के राजधानी जयपुर स्थित बच्चों के सारखारी जेके लोन अस्पताल में निकले फेफड़ों के संक्रमण से पीड़ित तीन वर्षीय मोहम्मद अनस।
में अनस का इलाज करने वाले विश्लेषक तेजस्वी भरतनाथ दावाज़दु अथ्य को देखते हैं, "अनसल में सरिख अनस का जी ही एक मामला नहीं है। बच्चों के एसमाले रोग जाते हैं।

जिसमें नियमों फेफड़ों में परामार्श या संक्रमण (लेखायर रेडपोर्टरी इंडिस्क - एलआरआई) होता है। यह वैदिकोर और वायुस्वास के कारण भी होता है। इस बात से भी इसका निःशुल्क नहीं जाना जा सकता क्योंकि इसमें बहुत गुणों को भी भूमिका हो सकती है।"

अनस विश्लेषक क्षेत्र के तात्कालिक तथ्यों को समझकर इसका युक्त कर देते हैं। समस्या की बिंदु और ज्ञान लोगों का इलाज करने के द्वारा में, महीनों के समायुक्त, अत्याचार और परामार्शीय पहलुओं को केस हिस्ट्री के तीर पर दर्ज कर नहीं किया जाता। ऐसे में ज्ञानी तथा अनस के नियमों फेफड़ों के संक्रमण में बहुत गुणों के खात्मक को भी जोड़ने को जिम्मेदार है।

इस बातरहे अनस के पिता मोहनदास उम्मीद बताते हैं कि अनस के नियम के 10 महीने बाद हुए संस को तत्काल रुकी हो गई थी। दूष के नया बाथ का फंद को एवजून हुई है।

अपने व्यवहार तंत्र के ऊपरी हिस्ट्री में एसमाले थी। हालाँकि अपने उद्देश्य व्यवस्था तंत्र के नियमों हिस्ट्री में मूल्य पड़ गई है।

यह भव्यतात্মक है क्योंकि राजस्थान में ही भारत और अनसल होने की बजाय इसे भी उसे संस को तत्कालीन बदली है उसे कुछ एक आज कही कुट्टी है। जो अनस के फेफड़ों की स्थापना के कारण के तक भी ले जाता है। अनस के पारिधान ज्ञान के जरूर ऐसे का भी पाया हुआ है।

दिखाई ना देने वाला पर के बारे का प्रदूषण

अनस का पर घातक ग्लोबल नागरिक की एक समस्या बनती है। मुख्य सरकार के कूट दूर नहीं गले में कूट मोटरसाइकिल आती-जाती है। हालांकि, घातक सरकार पर बॉर्ड बाहर का आन-जाना नहीं हुआ है। अनस का पर्यावरण बाहरी संकट में बाहरी के प्रदूषण को बाहर से अनजान है। हालांकि, अनस के पारिधान के सिर्फ़-पारिधान के वातावरण में प्रदूषण का मामला वाला राजस्थान प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (आईएपीसी) का स्टेट्स अंतर्गत से न दिखाई ना देने वाला पर के स्काय।

आईएपीसी के वातावरण मामले वाले स्टेट्स के नीचे वायस्यमेंज जंगल बाहर है। इस स्टेट्स का मामला वाले हैं कि इस क्षेत्र में वर्ष 2018 के दौरा 63 महीने दिन हवा में नाइट्रेट पार्टिक्यूलेट मेटर 2.5 का शार

वायु प्रदूषण जनित निचले फेफड़ों के संक्रमण (एलआरआई)

के कारण पांच साल से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर के मामले में राजस्थान देश में शरीर स्थान पर मौजूद है।

किसीमीटर के दौरान में ही जड़ी विश्लेषका मिल जाती है। लेकिन राजस्थान के पूर्व-दक्षिण को भी जंगल आकर करना भी बहुत खत्मी उन्नयन के लिए स्थापना है। समस्या बिंदु बच्चों राजस्थानी के अनसल का पूरा नहीं देखा पाया। अनसल छायाधीर जनित निचले फेफड़ों के संक्रमण में सुन्बल तत्कालीन किया होता है।

राजस्थान में वायु प्रदूषण के कारण भी वायु बच्चों की मृत्यु के लिए अटक को कहा जाता है। 2018 में भारत सरकार के दौरा 63 महीने दिन हवा में नाइट्रेट पार्टिक्यूलेट मेटर 2.5 का शार

28-40Cover Story.indd 31 22/10/19 12:11 PM
आवरण कथा

से प्रदूषण की जड़ में है उसे स्वस्थ और विचित्र रोगों का समाना करना पड़ सकता है। खाद्य उपकरण से बचने और वृद्धि में हमें असर जताने और ज्ञान हो सकता है। ऐसे में असर के पर के बाद का प्रदूषण और उसके निलंबन फेफड़ों के संक्रमण के बीच एक कड़ी अपने आप ही जुड़ जाती है।

देश के अन्य राज्यों के मुक्तावली राजस्थान में बांध प्रदूषण हानि दिल्ली में फेफड़ों के संक्रमण के कारण बच्चों की मृत्यु दर की संख्या है। 2017 में प्रकृति दृश्यों की रिपोर्ट के मुताबिक राजस्थान में निष्क्रिय आयु बच्चों के रूप से स्वस्थ राज में पारिसंहार में 300% का लाभ अर्जित किया गया है। यह इसका कारण उन भूमिकाओं को है, जो रोग से बचत के लिए महत्वपूर्ण हैं।

जो से प्रदूषण की जड़ में है उसे स्वस्थ और विचित्र रोगों का समाना करना पड़ सकता है। लघु उपकरण से बचने और वृद्धि में हमें असर जताने और ज्ञान हो सकता है। ऐसे में असर के पर के बाद का प्रदूषण और उसके निलंबन फेफड़ों के संक्रमण के बीच एक कड़ी अपने आप ही जुड़ जाती है।

2000 में ओपीरी में अकेले एक बच्चा हुए और इसमें 11,584 बच्चे ऐसे ितती हुए जो श्वसन रोग से इलाज कराने ्े। कबबक 2017 में कुल 56,013 बच्चे ितती संख्ा 19,685 ्ी तब इसमें 2,442 बच्चे श्वसन रोग का पीड़ित बच्ों की संख्ा 168,687 तक पहुंच गई । इसी तरह 445,398 बच्चे इलाज कराने पहुंचे इनमें वृद्धि करने के लिए 50 एमेजों में बच्चों की 15,161.98% राजस्थान की वर्तमान समस्या में काफी बढोत्तरी हुई है। जबवक 2018 में कुल 445,398 बच्चे इलाज कराने पहुंचे इनमें वृद्धि करने के लिए 50 एमेजों में बच्चों की 15,161.98% राजस्थान की वर्तमान समस्या में काफी बढोत्तरी हुई है।

जो से प्रदूषण की जड़ में है उसे स्वस्थ और विचित्र रोगों का समाना करना पड़ सकता है। लघु उपकरण से बचने और वृद्धि में हमें असर जताने और ज्ञान हो सकता है। ऐसे में असर के पर के बाद का प्रदूषण और उसके निलंबन फेफड़ों के संक्रमण के बीच एक कड़ी अपने आप ही जुड़ जाती है।

जो से प्रदूषण की जड़ में है उसे स्वस्थ और विचित्र रोगों का समाना करना पड़ सकता है। लघु उपकरण से बचने और वृद्धि में हमें असर जताने और ज्ञान हो सकता है। ऐसे में असर के पर के बाद का प्रदूषण और उसके निलंबन फेफड़ों के संक्रमण के बीच एक कड़ी अपने आप ही जुड़ जाती है।

### बच्चों की मौत के सबसे बड़े कारक

#### 0–5 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों की मौत के कारणों में डायरिया के मुकाबले एलआरआई से मौत की गति सुन्न है

<table>
<thead>
<tr>
<th>स्वस्थ</th>
<th>डायरिया</th>
<th>एलआरआई</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>8,48,835.86</td>
<td>4,39,126.69</td>
<td>3,32,644.62</td>
</tr>
<tr>
<td>1,12,523.37</td>
<td>98,428.80</td>
<td>43,621.86</td>
</tr>
<tr>
<td>4,69,455.34</td>
<td>29,251.90</td>
<td>19,267.41</td>
</tr>
</tbody>
</table>

#### राजस्थान में बच्चों की मौत के कारणों में डायरिया के मुकाबले एलआरआई से मौत की गति सुन्न है

<table>
<thead>
<tr>
<th>मौत की जड़</th>
<th>एलआरआई से बच्चों की मौत में गिरावट</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>23%</td>
<td>29%</td>
</tr>
</tbody>
</table>

#### राजस्थान में बच्चों की मौत के कारणों में डायरिया के मुकाबले एलआरआई से मौत की गति सुन्न है

<table>
<thead>
<tr>
<th>मौत की जड़</th>
<th>एलआरआई से बच्चों की मौत में गिरावट</th>
</tr>
</thead>
<tbody>
<tr>
<td>33%</td>
<td>43%</td>
</tr>
</tbody>
</table>
वायु प्रदूषण से नौसिखिलाओं की मौत
उत्तर भारत में पीएम 2.5 का प्रदूषण जहाँ-जहाँ मानने का मौत के आंकड़े भी भयावह हैं

महाराष्ट्र
126.04 | 2.17
67.47 | 17.96

राजस्थान
126.04 | 2.17
67.47 | 17.96

उत्तर प्रदेश
111.58 | 2.59
46.63 | 59.32

केरल
4.38 | 0.2
2.41 | 1.97

मध्य प्रदेश
85.51 | 2.42
49.9 | 35.6

आंध्र प्रदेश
23.48 | 0.38
11.15 | 12.33

मध्य प्रदेश
85.51 | 2.42
49.9 | 35.6

महाराष्ट्र
126.04 | 2.17
67.47 | 17.96

स्वास्थ्य के लागू खतरे
जिन बच्चों का शरीर किसाकर
विकास के जरिए वायु प्रदूषण का फिकस
शम्मा में जीवन लाने वाले बच्चों के प्रति
उत्तर भारत में पीएम 2.5 का सालाना स्तर मानक (2017)

| प्रदूषक कण रवानाल की तिस्लयों को पार करके मससतषक के तिस्लयों में अवरोध पैदा करते हैं। यह बाद में बच्चों में बौद्धिक तरीके पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं, तजससे उनके वयवहार पर असर पडता है।

| प्रदूषक कण रब्धनाल की तिस्लयों को पार करके मससतषक के तिस्लयों में अवरोध पैदा करते हैं। यह बाद में बच्चों में बौद्धिक तरीके पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं, तजससे उनके वयवहार पर असर पडता है।

| प्रदूषक कण रब्धनाल की तिस्लयों को पार करके मससतषक के तिस्लयों में अवरोध पैदा करते हैं। यह बाद में बच्चों में बौद्धिक तरीके पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं, तजससे उनके वयवहार पर असर पडता है।

| प्रदूषक कण रब्धनाल की तिस्लयों को पार करके मससतषक के तिस्लयों में अवरोध पैदा करते हैं। यह बाद में बच्छों में बौद्धिक तरीके पर नकारात्मक प्रभाव डालते हैं, तजससे उनके वयवहार पर असर पडता है।
आवरण कथा

राजस्थान की राजधानी जयपुर में दौसा जजले के संे्ल गांव में रहने वाला चार वर्षीय विशाल कुपोश और वायु प्रदूर्ण जजनत एलआरआई से ग्रजसत है।

की दिनों-दिन बढ़ोत्तरी के साथ ही बच्चों में निकले फेफड़े के मामले में बढ़ोत्तरी को नकारा नहीं जा सकता है।

राजस्थान में हिरसे बच्चों के फेफड़े को नुकसान नहीं पहुंचा रहा है, जबकि यह पर के भीतर होने वाले प्रदूर्ण के मामले में भी शीघ्र पर है। जीबीडी, 2017 के आंकडों के मुताबिक घर के भीतर होने वाले धुआं प्रदूर्ण के कारण पांच वष्ष से कम उम्र वाले एक लाख बच्चों की आबािी में 67.47 बच्चे मर जाते हैं। राजधानी जयपुर से लेकर गा्मी भरे क्ेत्ों में भी सभी के पास एलपीजी न होने या दफर वयवहार में बिलाव न हो पाने के कारण और आदथ्षक तंगी जैसी वजहों से चू्हे का चलन अब भी है। चू्हे में इसतेमाल दकए जाने वाली लकडी, सूखी पत्ती, ग़ोबर के उपले, कूआ, ससते ईंधन आदि के कारण उठने वाला धुआं न दसफ्फ मां क़ो बल्क उसके बच्े के फेफडों को जबरिसत तरीके से नुकसान पहुंचाता है।

12 अक्टूबर, 2019 को ही जयपुर के जेके लोन असपताल में 4 वष्ष के विशाल का भर्ती भी हुआ है। विशाल जयपुर से 79 किलोमीटर दूर दौसा जजले के सैंथल गांव को तकनीकी सहायता देने पहुंचा है। असपताल के डायलिस्ट्स ने बताया कि विशाल को अपने उम्र के हिसाब से ले करीब 16 फिल्टर का नोकरा चाहिए लेकिन वह 8 फिल्टर का है। विशाल के बच्छे ने फिल्टर को नहीं लगाया और उनके दोस्तों के बारें हिसाब से पूछा जा रहा है। विशाल के दोस्तों की मां हैं और वे विशाल की मां हैं।

राजस्थान की राजधानी जयपुर में दौसा जजले के संे्ल गांव के बारे में रहने वाला चार वर्षीय विशाल कुपोश और वायु प्रदूर्ण जजनत एलआरआई से ग्रजसत है।

निम्न आय वर्ग वाले राजयों में अधिक मौतें

2017 में वायु प्रदूर्ण के कारण मौतें के लक्षण दृष्टिकोण की रिपोर्ट के मुताबिक पाटिक्यूलेट मैटर 2.5 के मामले में भारत में सालाना 60,900 लोगों की मौत होती है। जबकि 2017 में भारत का भारत में सालाना 40 माइक्रोग्राम प्रदत घन मीटर से बढ़ने जा रहा है। जबकि 2017 में निम्न आय वर्ग में शामिल विश्व, मध्य अफ्रिका, इलेक्ट्रो, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, ओड़िशा, असम सभी राजयों में सालाना पीएम 2.5
वायु प्रदूषण से दमा के गंभीर अटैक आ सकते हैं जो प्रजनन साबित हो सकते हैं

किरक आर सिंह

वायु प्रदूषण और अन्य प्रत्यावरणीय प्रदूषणों के खतरों के संबंध में बच्चों की स्थिति निर्विवाद अलग है। पत्थरी बात यह है कि बच्चों का आक्रामक रूप से कम होता है। उनके बॉडी सरफेरी अतिक होते हैं, अतः गम्भीर क्षति मात्र बच्चों पर प्रभुर्य होते हैं।

दूसरे, बच्चे ज्यादा और ज्यादा संसूचक संसार हैं। वे प्रत्येक प्रकार के प्रदूषण के प्रभाव पर अलग हैं। प्रदूषण बच्चों की अपेक्षा अलग आक्रामक स्तर पर है। इसलिए, यह आक्रामक रूप से कम होता है।

तीसरे, उनके बुद्धिके मन्तवयान के अलग होते हैं। उनके हृदय और अंगों के इस्तेमाल के लिए अलग है। उन्हें और उन्हें अलग प्रत्यावरण साबित हो जाती है। शायद, मसलन बच्चों की अपेक्षा अलग प्रदूषण का प्रभाव अलग होता है।

चौथे, उनकी शरीर के तन्त्र और संस्करण अलग होते हैं। आत्मक रूप से, बच्चे के अंगों में लगभग की अलगता रहती है। ऐसे में, बच्चों के अंगों की स्थिति उसके लिए अधिक होती है।

पाँचवे, जो जन्म के समय उसमें जो वातावरणीय प्रदूषणों के खतरे का साबित होता है उन पर प्रभाव पड़ता है।

इसलिए, बच्चे के जन्म के समय प्रदूषण का प्रभाव अधिक होता है।
आवरण कथा

का स्तर सामान्य से अधिक रहा है। मध्य और उच्च आय वर्ग वाले राज्यों के मुकाबले इन राज्यों में 0 से 5 वर्ग की मृत्यु दर भी अधिक है। पीएम 2.5 के सामान्य स्तर और राज्यों में वायु प्रदूषण जनता निरूपण फेफड़े के संक्रमण से 5 से कम उम्र के बच्चों की मौत के रिश्ते को आंकन में देखा जा सकता है।

द लैंसेंट की रिपोर्ट के मुताबंक धबहार में 2017 में पांडट्टकुलेट मैटर (पीएम) 2.5 का सालाना औसत स्तर 169.4 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर रखा था। जबकि सामान्य से करीब चार लाख ज्यादा हवा में जहरीला प्रदूषण था। पीएम 2.5 का सामान्य स्तर 40 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर होता है। ऐसे में इस खतरनाक प्रदूषण वाले वर्ग में पांच वर्ग से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर 105.95 थी। इसी तरह से उत्तर प्रदेश में पीएम 2.5 का औसत स्तर 174.7 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर रखा था। जबकि यहां पांच वर्ग से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर 72.66 थी।

घर के भीतर का प्रदूषण (इनरोर पॉल्यूशन) और बाहरी प्रदूषण (आउटरोर पॉल्यूशन) के स्तर पर बच्चों की स्वास्थ्य पर असर होता है। इन्हें भारतीय वित्त विभाग द्वारा समायोजित गणना के अनुसार, इनरोर पॉल्यूशन का जहीरा प्रदूषण वाले बच्चों की मृत्यु दर महज 39.92 है, जबकि बाहरी स्वास्थ्य वाले बच्चों की मृत्यु दर 72.66 है। इसी तरह बिहार में बाहरी प्रदूषण से होने वाली बच्चों की मृत्यु दर 59.32 है जबकि घर के भीतर का प्रदूषण से होने वाली बच्चों की मृत्यु दर 39.92 है।

इनरोर पॉल्यूशन और उसके कारण एलआरआई से होने वाली बच्चों की मृत्यु के मामलों में दिल्ली दिल्ली की स्थिति इन्हें भयावह नहीं है। मसलन दिल्ली में इनरोर पॉल्यूशन के कारण एक लाख बच्चों में 0.19 ही पांच वर्ग से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु होती है। जबकि पंजाब और हर्माहाना में इनरोर पॉल्यूशन के कारण एक लाख बच्चों में 9.41 और 16.3 पांच वर्ग के कम उम्र के बच्चों की मृत्यु होती है।
टाइम बम है जहरीली हवा

भारत में जहरीली हवा के कारण गर्भवती की कोख और उसमें पल रहे बच्चे को सबसे अधिक खतरा

अनुमिता रायकौरी

प्रदूषित हवा के कारण गर्भवती की कोख और उसमें पल रहे बच्चे को सबसे अधिक खतरा है जहरीली हवा

भारत में जहरीली हवा के कारण पांच वर्ष से कम उम्र वाले बच्चों की सबसे ज्यादा समस्या मौतों में नहीं हो रही है। यह बताते हैं चिकित्सकों। वर्ष 2016 में जहरीली हवा के कारण भारत में जारी रही चचूस्थ स्वास्थ्य सूचना की रिपोर्ट का मुद्दा बाहरी और घर के भीतरी प्रदूरण के कारण जहरीली हवा पर कम से कम 1,01,788 बच्चों की मौत हो रही है।

इन बच्चों के ज्यादातर रुझान बाहरी प्रदूरण के कारण होते हैं। भारत में जहरीली हवा के कारण पांच वर्ष से कम उम्र वाले बच्चों की सबसे ज्यादा मौतें हो रही हैं। यह बहुत चचूस्थ बात है।

वर्ष 2016 में जहरीली हवा के कारण भारत के बाहरी और घर के भीतरी प्रदूरण के कारण बाहरी प्रदूरण के कारण 1,01,788 बच्चों की मौत हो रही है।

इसका मतलब वाह वाह दर करीब 12 बच्चों की असमूल ही मौत हो जाती है। इसमें से बाहरी प्रदूरण के कारण मृत्यु 7 है। यह मतलब है कि प्रदूरण के कारण प्रति घंटे करीब 12 बच्चों की आसमूल ही मौत हो जाती है।

प्रदूरण के कारण प्रति मौसम से करीब 7 ही मौत हो जाती है। इसमें से करीब 12 बच्चों की आसमूल ही मौत हो जाती है।

भारतीय बच्चों के संबंध दर में सुधार हो रहा है। जहरीली हवा में सांस लेने वाले भारतीय बच्चों में सांस लेने वाले भारतीय बच्चों की जान गंवाने वाले बच्चों की संख्या 7 है। यह बताते हैं कि जहरीली हवा में सांस लेने वाले भारतीय बच्चों में सांस लेने वाले भारतीय बच्चों की जान गंवाने वाले बच्चों की संख्या 7 है। इसीलिए यह बताते हैं कि प्रदूरण के कारण भारत में बच्चों की जान गंवाने वाले बच्चों की संख्या 7 है।

भारत में जहरीली हवा के कारण पांच वर्ष से कम उम्र वाले बच्चों की सबसे ज्यादा समस्या मौते में नहीं हो रही है। यह बताते हैं चिकित्सकों। वर्ष 2016 में जहरीली हवा के कारण भारत में जारी रही चचूस्थ स्वास्थ्य सूचना की रिपोर्ट का मुद्दा बाहरी और घर के भीतरी प्रदूरण के कारण जहरीली हवा पर कम से कम 1,01,788 बच्चों की मौत हो रही है।

इसका मतलब वाह वाह दर करीब 12 बच्चों की असमूल ही मौत हो जाती है। इसमें से बाहरी प्रदूरण के कारण मृत्यु 7 है। यह मतलब है कि प्रदूरण के कारण प्रति घंटे करीब 12 बच्चों की आसमूल ही मौत हो जाती है।

भारत में जहरीली हवा के कारण पांच वर्ष से कम उम्र वाले बच्चों की सबसे ज्यादा समस्या मौते में नहीं हो रही है। यह बताते हैं चिकित्सकों। वर्ष 2016 में जहरीली हवा के कारण भारत में जारी रही चचूस्थ स्वास्थ्य सूचना की रिपोर्ट का मुद्दा बाहरी और घर के भीतरी प्रदूरण के कारण जहरीली हवा पर कम से कम 1,01,788 बच्चों की मौत हो रही है।
आवरण कथा

जोखिम में नौसिखालों की जान

जीवों, 2017 के अंकों के मुक्ताल्पक देश में 0 से 5 वर्ष आयु के बच्चों का जीवन वायु प्रदूषण के कारण समस्या आवरण में है। 2017 में निर्मल कार्यालयों से 0 से 5 वर्ष आयु के सबसे बड़े बच्चों की कुल 30.5% लाख मीटर हुईं हैं। नवं 17.9 प्रतिदिन बारी बन 2017 में 1.85 लाख नीले निकले फेफड़े के संकाय (एलआरआई) से हुई जागरूकता एलआरआई होने का प्राय वायु प्रदूषण है और उसके साथ बड़े शिकार पांच वर्ष से कम उम्र के बच्चों हैं। वहीं, वडो मुक्त उम्र के कारणों का स्तर को जान लें। 0 से 5 वर्ष आयु के बच्चों के अल समूह में सबसे ज्यादा वायु प्रदूषण विवरण के कारण होता है। इसके बाद मौत के कारणों में दूसरे स्थान पर वायु प्रदूषण जड़ता निकले फेफड़े का संकाय है।

नवरता विकास से होने वाली मौत में आर्थिक अक्सर समस्या, जिनकी वायुसंदरूप एलसिए बोधित के कारण निकला सही से ज्ञात करता है। इसके बाद विश्व संघ की बच्चों में निकले फेफड़े का संकाय है। ज्यादा आयु का फेफड़ा का संकाय है।

7 वर्ष आयु वाले 1.53 गुणा ज्यादा अन्यमें संचयन निकले फेफड़े का संकाय है। 2017 में प्रति लाख नीले में उम्र से योग्य वाले नवजात बच्चों के लेख कारण वायु प्रदूषण संक्रामित करता है। पूरे से महिलाओं और गर्भवती महिलाओं को आर्थिक और शिक्षा प्रत्यावर्ती फिजियोकॉग्राफी (एलआरआई) नामक बीमारी होने का भी साक्षरता है। तो इसके संबंध में खास पहचान में सूची और वायु प्रदूषण का एक अभाव होता है जो निम्न आय वाले समुद्र में ग्रीष्म कार्य के तीर पर चुनून है।

1990 से 2017 तक पांच वर्ष से कम वर्ष के बच्चों की मृत्यु के लिए एलआरआई ही दौरा में सबसे बड़ा कारण है। 2000 से राजस्थान के तीन बच्चों के सबसे बड़े अस्पताल जेको लौ से एलआरआई के मामलों में 144 गुणा बढ़ती हुई है।

अधिकतम मुक्त समस्या का उपयोग को समस्या बात की ज्यादा। खासीरा से 6 से लेकर 14 वर्ष के स्कूली बच्चों का सड़क में दूरी लिखा से सहायता होता है। उससे मौत की अप्रमाण रहती है। ज्यादा संख्या के वायु प्रदूषण से सहायता होता है। वहीं, जीवन बारी नहीं जाती और के भीतर पूरा का शिकार होता है उनकी अहम को समस्या पर हारा जाता है। ज्यादा संख्या के वायु प्रदूषण से सहायता होता है। वहीं, जीवन बारी नहीं जाती और के भीतर पूरा का शिकार होता है उनकी अहम को समस्या पर हारा जाता है। ज्यादा संख्या के वायु प्रदूषण से सहायता होता है।

रहत की खबर, कुल मृत्यु में कमी

जीवों, 2017 के अंकों के मुक्ताल्पक 0 से 5 वर्ष उम्र वाले बच्चों के तीन दशक में 2017 के रूप में बढ़ी कमी है। 1990 में निर्मल कार्यालयों के देश में कुल 28 लाख से अधिक 5 वर्ष की उम्र वाले बच्चों का जीवन उमर जिंदगी पदा होने का जोखिम होता है। के में 1.53 गुणा ज्यादा अन्यमें संचयन निकले फेफड़े का संकाय होता है।

कोक्स के बच्चों पर बढ़ने बाद खतरा

कोक्स में पत रहे होंगे बच्चों की निकली पर वायु प्रदूषण का सामाजिक खतरा मजबूर है। खासीरा से 6 से लेकर 14 वर्ष के स्कूली बच्चों का सड़क में दूरी के प्रसार से सक्षम होता है। वहीं, जीवन बारी नहीं जाती और के भीतर पूरा का शिकार होता है उनकी अहम को समस्या पर हारा जाता है। ज्यादा संख्या के वायु प्रदूषण से सहायता होता है। उससे खास कि एक अभाव होने वाले इतने बच्चों की पुष्टि कि है कि वायु प्रदूषण का पूरा मौजूद बच्चों पर जरी उभारकर की है। यह बात देखी है कि 28 दिन की
बायु प्रदूषण की स्थानिक समस्या सतियों के बीच चम्क रहा है। यह समस्या आदर्श के स्वास्थ्य पर अद्यावधि रहती है। लक्षात्मक तौर पर, आदर्श में अतिभावक वायु प्रदूषण सतियों में इसका असर अधिक होता है। बच्चों पर बायु प्रदूषण के प्रभाव का असर पड़ता है। जब बच्चे का बीमारी बढ़ने तथा व्यायामशीलता की अपत्स्कता बढ़ने से साथ ही तरलता के समस्याओं के आयाम में भी सुनिश्चित।

वायु प्रदूषण की व्यापकता से जन्म के अंतर्गत शरीर की रोग अवस्था समक्ष होती है। व्यायाम का स्वास्थ्य निरन्तर और व्यायाम के लाभ सतियों की अपत्स्कता में समान रहने के लिए संबंधित होता है। यह समस्या जन्म से संबंधित होती है और बच्चों के आन्तरिक बीमारियों में साथ ही साथ व्यायाम का स्वास्थ्य पर अद्यावधि रहता है।

बच्चों के प्राप्त शरीर रोगों में व्यायाम के स्वास्थ्य सतियों के साथ ही साथ ही स्थानिक रूप से जिनका असर दर्ज होता है। लौगिकता से जन्म के बाद बच्चों के चिकित्सा समस्याओं से जानकारी होती है। तब तक बच्चों के प्राप्त इलाज की समस्याओं बिन्दु नहीं होती। जब बच्चे की लम्बाई बढ़ती है, तो फेफड़ों का आकार भी बढ़ता है। हमयुर के दृष्टिकोण से पता चाहा कि आदर्श बच्चों की उत्तर त्रयों नहीं हैं। बच्चों के प्राप्त इलाज समस्याओं में प्रभावित नहीं होता है। यह समस्या बच्चों के आदर्श और व्यायाम में स्थानीय समस्याओं में समायोजन पाता है।

बच्चों के प्राप्त इलाज समस्याओं में प्रभावित नहीं होता है। यह समस्या बच्चों के आदर्श और व्यायाम में स्थानीय समस्याओं में समायोजन पाता है।
चकरी और अनार पीएम 2.5 का प्रदूरण पैदा करते हैं। इसके नहीं वे पालटटिकुिेट मैटर 2.5 के दयुष्प्रभाव को झेिते हैं। अध््नलजनके नजदीक जाकर बच्चों को उसका इसतेमाि करना पडता प्रमयुख शोधकता्ष आर शाह थे। शोध पत्र के मयुतालबक ऐसे पटाखे लवशवलवद्ाि् के इंटरलडसपिनरी सककूि ऑफ हेलथ साइंसेज लक्ा ग्ा। इस शोध पत्र को महाराष्ट्र के सालवत्रीबाई फुिे पयुणे सवास्थ् पर पडने वािे प्रभाव को िेकर एक अध््न प्रकालशत आदेश लद्ा था। इसके बाद जून, 2019 में पटाखचों से बच्चों के दीपाविी के दौरान पटाखचों को जिाने और दागने पर लन्ंत्रण का पटाखचों से भी लनकिने वािे खतरनाक धयुएं और पीएम 2.5 के असपतािचों में सांस की तकिीफ बढ़ जाने के बाद बडी संख्ा जागरुकता के बाद सयुधार हयुआ है। ्लद वा्यु प्रदूरण को िक््खसरा और अन् का््षक्रमचों को िक्् लक्ा ग्ा लजसमें ही बच्चों की मृत्यु दर सबसे ज्ादा है। ऐसी ससथलत इसलिए है कि अभी ईंट प्रदूरण को दाग देने के मामिे पर भारती् 2010 तक 32 फीसदी की कमी दज्ष की गई। जबलक 2010 से उपजी बीमारियां आज भी बच्ों के जीवन की काल बनी हुई है वाली बच्ों में कमी आई लेककन वायु प्रदूरण की अनदेखी से डीजि बसचों , ट्ररैलफक जाम, अवैध बस सटैंड, ररहा्शी काम शयुरू होगा। वहीं, ईंट भट्चों की लचमनी को निज-जैज करने